17–18 वीं शताब्दी में शेखावाटी के नगरों के भित्तिचित्र

***जयन्त कुमार जाखड़**

"जोधा जी बसायो जोधपुर, जैसलमेर जैसल भाटी,
कच्छावा वीर शेखाजी के नाम से है शेखावाटी
रोहिड़ा का फूल खिलै, इतरावै कीकर और जांटी,
आयोड़ा का मान अठै, आ ठेठ से परिपाटी,
बड़ी–बड़ी हेलियां, चिकारी बै पर अनूठी,
आ है म्हारी शेखावाटी...."

जो भी उपर्युक्त पंक्तियों का श्रवण या पठन करता है शेखावाटी अंचल की महक का आभास गाहे–बगाहे उस हो ही जाता है। शेखावाटी का भू–भाग प्राचीन समय से ही महत्वपूर्ण रहा है। इस भूमि का इतिहास बड़ा विलक्षण और संस्कृति अति गौरवपूर्ण रहीं है। प्राचीन वैपरित्य के कारण भूतकाल में बड़ी शक्तियां इस क्षेत्र से दूर रही जिसके फलस्वरूप यह क्षेत्र उनकी विनाश लीला की क्रीड़ा भूमि न बनकर बिना किसी व्यवधान के अपने नगरीकरण, कला सम्पन्न और आर्थिक–सांस्कृतिक धरोहर को अपने प्राचीन कलेवर में समेट कर सुरक्षित रख सका। यह भू–भाग अतिप्राचीन है। यह भू–भाग अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण रहा है। नगरीकरण, आर्थिक, कलात्मक व ऐतिहासिक दृष्टि से यह क्षेत्र दीर्घ अवधि तक सुसम्पन्न एवं सवंर्धित होता रहा है।

शेखावाटी शब्द को प्रयोग शेखा की वाटिका से रखा गया। इतिहास के अनुसार कच्छावा राजकुमार शेखाजी से पहले इस क्षेत्र पर सैनिक घुमंतु शासक आते–जाते रहे। राव शेखा के परिवार ने आमेर (जयपुर) की एक छोटी रियासत से इस क्षेत्र पर शासन किया। महाराव शेखाजी ने आमेर की सामन्तशाही का उल्लंघन करते हुए 1471 में अपनी संप्रभुता की घोषणा की और इन्हीं के नाम पर इस क्षेत्र का नाम शेखाजी की फुलवारी (वाटिका) शेखावाटी रखा गया। वर्तमान शेखावाटी प्रदेश में राजस्थान के सीकर और झुंझुनू जिले आते है शेखावाटी की माटी की अपनी खासियत है यही कारण है कि यह अंचल शूरवीर योद्धाओं, देश के प्रमुख उद्योगपतियों, महान संत महात्माओं और सरस्वती पुत्रों की जन्म स्थली रहा है।[1]

शेखावाटी के इस छोटे से भू–भाग में कई नगर एवं कस्बें हैं। इन नगरों में कला और साहित्य का भरपूर विकास हुआ। यहां अनेक मन्दिरों, भवनों, किलों, छतरियों, बावड़ियों, तालाबों, कुओं, धर्मशालाओं एवं रमणिय चित्रों से अलंकृत हवेलियों का निर्माण हुआ जो कला की अनुपम धरोहर है। इन नगरों का संसार अति महत्वपूर्ण रहा है। शेखावाटी की भित्तिचित्रण की परम्परा बहुत प्राचीन है। यहां के प्रारम्भिक चित्र हमें उदयपुरवाटी के संत जोगीदास शाह की छतरी एवं परसरामपुरा में स्थित गोपीनाथ मन्दिर में देखने को मिलते है। प्रारम्भिक चित्र पौराणिक विषयों

अर्थात् धार्मिक विषयों पर आधारित थे लेकिन कालान्तर में यहां की भित्तियों पर सभी विषयों से सम्बन्धित चित्र चित्रित होने लगे। यहां के भित्तिचित्रों पर मुगल, ब्रिटिश एवं राजस्थान की अन्य शैलियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।[2] इनसे प्रभावित होने के बावजूद इस शैली की अपनी विशेषता है। अतः इस शैली की विशेषता एवं इस पर अन्य शैलियों का प्रभाव दिखाना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

लोक रीति–रिवाजों, पर्वों एवं देवी देवताओं और मांगलिक संस्कारों के वे भित्तिचित्र शेखावाटी की सांस्कृतिक गतिविधियों का भी परिचय देते है। इनमें अधिकांश भित्तिचित्र धार्मिक है जिनमें लोक कथानक चित्रों की बहुतायत है। शेखावाटी क्षेत्र में स्थापत्य की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। जिससे समग्रता का आभास मिलता है। स्थापत्य कला (महल, गढ़, किले, हवेली, मंदिर, कुएं, बावड़ी, मस्जिद, छतरी आदि) अनेक रूपों में अभिव्यक्ति हुई है। जो प्रत्येक भित्तिचित्रों से सुसज्जित हैं भित्तिचित्र शेखावाटी के इतिहास का ऐसा दर्पण है जिसमें तत्कालीन समाज का सच्चा प्रतिबिंब देखने को मिलता है।[3]

शेखावाटी के स्थापत्य का आधार लिए ये भित्तिचित्र हमें उस वर्तमान में ले जाते हैं जब शेखावाटी का संपूर्ण मानसिक परिवेश अपनी सृजनात्मक की उन्नत अवस्था में रहा।[4] शेखावाटी के प्राकृतिक सुन्दरता एवं इन्द्रधनुषीय रंगो को मूर्त रूप मध्ययुगीन काल में दिया गया। राजा, महाराजाओं, सेठों ने इसी प्राकृतिक सौन्दर्य अर्थात् इन्द्रधनुषीय रंगो को महलों, हवेलियों, कुओं, बावड़ियों आदि पर उतारना प्रारम्भ किया और भित्ति चित्रों की यही परम्परा 19 वीं शताब्दी में अपनी चरम सीमा पर थी। मुख्यतः शेखावाटी में भित्ति चित्र की परम्परा 17 वीं शताब्दी से मानी जाती है। इसका मुख्य प्रमाण 1749 में उदयपुरवाटी में संत जोगीदास शाह की छतरी एवं 1758 में परसरामपुरा गांव में शार्दुल सिंह की छतरी पर बने भित्ति चित्र हैं।[5]

प्रारम्भ में चित्रित की गई हवेलियों में मुख्य रूप से तीन रंगो लाल, नीला, हरे रंग का ही प्रयोग किया गया थां इन प्रारम्भिक रंगो को देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि उक्त हवेली किस काल या समय में निर्मित है। इस क्षेत्र के भित्ति चित्रों का मुख्य विषय धार्मिक ही रहा। ये चित्र उस समय की जीवन शैली को प्रदर्शित करते हैं जब वहां न कोई लिखित कानून था और न ही अपराध रोकने जैसे कोई व्यवस्था थी। स्थानीय लोगों के अनुसार धार्मिक भावनाओं के माध्यम से ही समाज में लोगों के रहन–सहन को नियन्त्रित किया जा सकता था। अतः लोगों को धर्म का संदेश देने, नए–नए आविष्कारों, साधनों से जनता को अवगत कराने, यहां तक कि रोजमर्रा की जिन्दगी को भी भित्ति चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया गया है।[6]

शेखवाटी क्षेत्र में यहां का व्यापारी वर्ग यहां से गुजरने वाले व्यापारियों के साथ अपना व्यापार करते तथा धन कमाते थे। यह क्षेत्र उस समय व्यापारिक मार्ग था। शेखावाटी क्षेत्र के व्यापारी केवल यहीं पर नहीं बल्कि पश्चिमी देशों के व्यापारियों यथा–ईरान, ईराक, अफगानिस्तान आदि के साथ भी धन कमाने का कार्य किया करते थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा बन्दरगाहों की सुविधा उपलब्ध कराने के बाद में सेठ लोग ज्यादा पैसा कमाने के लालच में कलकत्ता, मद्रास, मुंबई आदि स्थानों पर बस गये। इसी से इन्होंने अत्यधिक मात्रा में धन कमाया। इस धन का उपयोग अपने ऐशो आराम के अतिरिक्त अपनी जन्म भूमि पर भी किया। यहां अपनी सम्पन्नता दिखाने के लिए हवेलियों, धर्मशालाओं, कुओं व बावड़ियों का निर्माण भी करवाया।[7] इस प्रकार राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में भित्ति चित्रों का शनैः शनैः विकास होने लगा था। इस विकास की दर ने जा गति पकड़ी उसके उदाहरण हमारे सामने वर्तमान की शेखवाटी की हवेलियों, मकान, बावड़ियों, धर्मशालाओं आदि में उकेरे हुए भित्ति चित्र प्रस्तुत करते हैं।

शेखावाटी की हवेलियां कस्बों एवं गांवों में अधिक हैं इसलिये लोकजीवन के प्रभाव से वे अछूती नहीं है। भित्ति चित्रण में लोक कथाओं का वैशिष्टय भी देखते ही बनता है। जैसे ढोला मारू, निहालदे–सुल्तान,

पृथ्वीराज–संयोगिता, खातण–गौरी आदि के अंकन के साथ लोक जीवन की अनेक भाव–भंगिमाओं को भी कलाकारों ने अपने चित्रण का विषय बनाया हैं। शेखावाटी शैली में सर्वाधिक विषय उन्नसवीं शताब्दी के बदलते परिवेश को अभिव्यक्त करने के लिए बनाये गये हैं। इस दृष्टि से उन्नीसवीं शताब्दी के बदलाव, रहन–सहन, नये–नये अविष्कारों और उनका प्रभाव अध्ययन इन चित्रों के माध्यम से सहज ही किया जा सकता है। रेल, मोटर, हवाईजहाज, कपड़े सीलने की मशीन, साइकिल, बघ्घी, बैण्ड बाजा, कुर्सी, सोफसेट आदि हैं।[8]

सेठों व साहूकारों द्वारा विशाल हवेलियों का निर्माण तो करवाया गया परन्तु इनकी दिवारों का सुनापन समाप्त करने के लिए इन्हें भित्ति चित्रों से सुसज्जित करवाया गया और यहाँ से भित्ति चित्रों की परम्परा आरम्भ हुई। साथ ही जो दृश्य कलकता या अन्य बड़े शहरों में देखने को मिलते थे उन्हें यहां पर चित्रित करवाया जिससे स्थानीय जनता उससे अवगत हो सके अथवा उस साहुकार एवं सेठ का रूतबा लोगों में कायम रहे जैसे रेलगाड़ी, मोटर, कार ग्रामोफोन इत्यादि।[9]

17वीं शताब्दी में बने प्रारम्भिक भित्ति चित्रों का विषय – धार्मिक ही रहा परन्तु 19वीं शताब्दी में बदलते परिवेश के परिणामस्वरूप य साहुकारों द्वारा अंग्रेजों की होड़ करने के कारण ब्रिटिश प्रभाव के चित्र अधिक बनने लगे। परन्तु जब मनोरंजन की बात की जाये तो उस समय के सम्पन्न जागीरदारों व सेठों की रंगीन मिजाजों के बारे में जिक्र करना भी आवश्यक है। इसका प्रमाण यहां के हवेलियों के शयन कक्षों में उत्तेजक भित्ति चित्रों से लगाया जा सकता है, जहां काम कला का भरपूर चित्रण है। कहा जाता हैं कि साहुकार जवानी में तो कमाई करते रहे परन्तु जब अधेड़ अवस्था पार करके सम्पन्नता हासिल की तो वे शारिरिक रूप से अपने आपको असहाय महसूस करने लग तो ऐसे में ये चित्र कामोतेजना बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते थे।[10]

भारत में मुगल चित्रकला का प्रारम्भ 16वीं से 17वीं शताब्दी के मध्य हुआ। यह वही समय था जब मुगल बादशाहों द्वारा भारत के बहुत बड़े भाग पर शासन किया जा रहा था। मुगल कला का जन्म, उन्नयन एवं पतन मुगल साम्राज्य के उत्थान एवं पतन के साथ ही निहित था। मुगल बादशाहों द्वारा प्रोत्साहित इस कला ने विश्व में अपनी एक महत्वपूर्ण चित्र शैली के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की है। मुगल राजपूतों सम्बन्धों के परिणामस्वरूप मुगल शैली का राजस्थान में प्रवेश हुआ। शेखावाटी के भित्ति चित्रों के विश्लेषण से ज्ञता होता है कि यहां के भित्ति चित्र अन्य भारतीय शैलियों से साम्यता रखते हैं। यहां के प्रारम्भिक भित्तिचित्रों पर मुगल एवं जयपुर शैली का प्रभाव आया है। मुख्य रूप से शेखावाटी में भित्ति चित्रों की परम्परा एवं विकास के चरण 17वीं शताब्दी से मानी जा सकती है। प्रारम्भ में ये चित्र मन्दिर, सरायों, धर्मशालाओं, छतरियों आदि पर चित्रित किये गये थे। मुगल प्रभाव मुख्य रूप से उन्हीं स्थानों पर दिखाई देता है जो जयपुर के आसपास या फिर केन्द्र सत्ता के सम्पर्क में थे। जैसे झुन्झुनू, नीम का थाना, खण्डेला, फतेहपुर आदि।[11]

मुगल प्रभाव एवं शेखावाटी के भित्ति चित्रों के विकास को विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है जैसे वास्तुकला, वेशभुषा, पशु–पक्षी चित्रण आदि। भित्ति चित्रों ने ही नहीं बल्कि वास्तुकला ने कला ने भी यहां विकास की गति पकड़ी। जैसे कि मुगल प्रभाव के कारण इस क्षेत्र में बिना पाल के कुओं के स्थान पर चार मीनार वाले कुएं बनने लगे थे। चार मीनारें मुगल वास्तुकला की ही देन है।[12] मुगल शैली का प्रभाव यहां के भित्ति चित्रों की वेशभूषा पर दिखाई देता है। यहां चित्रित पुरूष एवं महिलओं की वेशभूषा पर भी मुगल प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं। मुगल पुरूष की वेशभूषा में जामा, चुस्त पायजामा, कमर में पटका, पगड़ी पहने आदि चित्रित किया है। यहां के पुरूषों की पगड़ी में मुगल प्रभाव स्पष्ट रूप से नजर आता है। यहां कई पुरूषों को तंग पायजामा व झींगा पहने भी चित्रित किया गया है। स्त्रियों को दुपट्टा ओढ़े दिखाया जाना भी मुगल प्रभाव का परिचायक है।[13] यहां के दुर्गों में चित्रित चित्रों पर मुगल प्रभाव सर्वाधिक है। खण्डेला जो कि सीकर जिले में स्थित है, के दुर्ग में स्थानीय शैली के

साथ–साथ मुगल प्रभाव भी आया है। मुगल शैली का सर्वाधिक प्रभाव झुन्झुनू जिले के उदयपुरवाटी में स्थित संत जोगीदास शाह की छतरी पर दिखाई देता है। जहां पर मुगल बादशाहों एवं सूफी संतो को चित्रित किया है। सम्भवतः यह शेखावाटी का एकमात्र स्थान है जहां सूफी संतो को दिखाया गया है।[14]

सत्रहवीं शताब्दी में भित्तिचित्रों को ही नहीं बल्कि सभी प्रकार के चित्रों को बड़ा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ एवं उनका विकास द्रुत गति से हुआ। राजस्थान के नेरेशों का जहांगीर के दरबार से भी निकट सम्पर्क था।[15] जब सम्पूर्ण राजस्थान के भित्तिचित्रों पर मुगल प्रभाव था तो स्वाभाविक है कि उनका प्रभाव शेखावाटी पर भी पड़ना था। इसी के फलस्वरूप बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में शेखावाटी के एक–एक कस्बें की एक–एक हवेलियों पर भित्ति चित्रित होने लगे। यहां के लगभग सभी भित्तिचित्र मुगल प्रभाव से ओत प्रोत हैं लेकिन फिर भी ये शेखावाटी की भित्ति चित्र परम्परा एवं उनकी विकास की कहानी के उत्कृष्ट उदाहरण है।

भारतीय कला के अध्ययन की दृष्टि से इसका ऐतिहासिक उद्भव उस युग से होता है। जब 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अंग्रेजों की एक व्यापारिक मंडी 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' ने भारत में अपना अस्तित्व बना लिया था और इस आड़ में अंग्रेजों ने भारत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्रों में अपनी जड़ें जमा ली थी। इस ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 19वीं शताब्दी में भारत एवं उसके राज्यों को 'कम्पनी चित्रण शैली' देकर भारतीय कला क्षेत्र में वृद्धि की है।[16]

शेखावाटी क्षेत्र में अधिक भित्ति चित्रांकन का प्रादुर्भाव हवेलियों के निर्माण से ही माना जाना चाहिए। अंग्रेजी राज्य की स्थापना के बाद यहां के सेठों ने अपना व्यापारिक क्षेत्र बढ़ाया। वे अंग्रेजों के व्यापार के सहयोगी बने और अपने साहस और उत्साह के कारण घर से कलकता, बम्बई जैसे महानगरों की ओर प्रस्थान कर चले।[17] 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से ही यह क्षेत्र व्यापारिक केन्द्रों में शामिल हो गया तथा सेठ साहूकारों ने के बाहर जाकर व्यापार करने के कारण यह क्षेत्र धनी हो गया। इस प्रकार पिलानी के बिड़ला, नवलगढ़ के पोद्दार, मुकुन्दगढ के कानोडिया, फतेहपुर के गोयनका, रामगढ़ के रूईयां इत्यादि बड़े औद्योगिक घरानों ने राजस्थान की अर्थनीति में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। उन्होंने अपने–अपने नगरों एवं कस्बों में बड़ी–बड़ी हवेलियों एवं छतरियों आदि का निर्माण करवाया व उन्हें चित्रित करवाया।

ब्रिटिश शैली से प्रभावित शेखावाटी के भित्ति चित्रों में लोक जीवन की झांकी देखने को मिलती है। अंग्रेजी आगमन से यातायात के साधनों, रहन–सहन, वेशभूषा तथा नवीन अविष्कारों के कारण सेठ लोग प्रभावित हुए और उन्होंने कम्पनी सभ्यता के प्रभाव को अपनी हवेलियों में अंकित करवाया।[18] अंग्रेजी सभ्यता के कारण भित्ति चित्रों की विषय वस्तु भी परिवर्तित हुई। सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक इस शैली का विकास हुआ। ब्रिटिश शैली से प्रभावित चित्रों में कलाकारों ने विदेशी विषय वस्तु को अधिकतर नहीं देखा, इसलिए उन्होंने अपनी कल्पना को विशेष रूप से साकार रूप में प्रस्तुत किया। इस क्षेत्र के प्रारम्भिक चित्र प्रमुखतः धार्मिक एवं पौराणिक विषयों से सम्बन्धित होते थे परन्तु अंग्रेजों के आने के बाद औपनिवेशिक प्रभाव यहां के भित्तिचित्रों में नजर आने लगा।[19]

शेखावाटी के भित्ति चित्रों के विकास पर ब्रिटिश प्रभाव इतना पड़ा कि यहां के चितेरे अंग्रेजी शैली का नकल करने लगे। इस प्रभाव के कारण मोटर गाड़ी, पुरानी परम्परा में प्रचलित हाथियों से ज्यादा प्रचलित हो गई और फरिश्ते (एन्जिल्स) पुरातन परम्परा के देवताओं से अधिक लोकप्रिय हो गये। ब्रिटिश प्रभाव के कारण भित्तिचित्रों में भारतीय सैनिको के स्थान पर विदेशी टोपधारी सैनिकों के चित्रांकन का विकास होने लगा। बग्गियों में राजा, महाराजा, सेठ–सेठानियों के स्थान पर अंग्रेजी बाबू–मेम के चित्रों का विकास नजर आने लगा था। मारवाड़ियों को कारों में बैठे, चलोते हुए आदि का चित्रण होने लगा था। वेशभूषा की दृष्टि से भी भित्ति चित्रों विकास के चरण आगे बढ़ रहे

थे जैसे कि स्थानीय वेशभूषा धोती कुर्ता के स्थान पर अंग्रेजी सूट–पेन्ट का चित्रांकन आरम्भ हो गया था। भारतीय नारी के स्थान पर विदेशी मेम (महिला) के चित्र बनने लगे। अंग्रेजी मेम को किताब पढ़ते हुए, कुत्ते को खिलाते हुए, सितार बजाते हुए, छाता पकड़े हुए आदि आदि मुद्राओं में अंकित किया जाने लगा।

औपनिवेशिक (ईस्ट इण्डिया) प्रभाव ने भित्ति चित्रों की विषय वस्तु ही नहीं बल्कि रंग पद्धति को भी प्रभावित किया। अब विदेशी रंगों एवं छाया प्रकाश का प्रचलन होने लगा। प्रारम्भिक चित्रों में प्राकृतिक रंगो का प्रयोग किया जाता था जिन्हें कलाकार हाथों से सिलबट्टे व लोढी से महिनों तक पीसकर तैयार करते थे। परन्तु अब रेडिमेड रंगों का प्रयोग होन लगा।[20] शेखावाटी के भित्तिचित्रों को यांत्रिका साधनों, अंग्रेजों की वेशभूषा आदि ने ही प्रभावित नहीं किया वरन् कलकता, बम्बई, मद्रास में घटित होने वाली घटनाओं अथवा वहां अंग्रेजों द्वारा बनाये गये भवनों, स्टेडियम आदि को भी यहां भित्ति चित्रों में चित्रित किया गया है। उदाहरण के लिये लक्ष्मणगढ में स्थित पालड़ीवाल की हवेली है जिसमें बम्बई, मद्रास, कलकता आदि में स्थित प्रसिद्ध भवनों आदि को चित्रित किया है। इसी हवेली के एक चित्र में बाजार का दृश्य चित्रित किया गया है। जिसमें अंग्रेज व्यक्तियों के साथ–साथ भारतीय पुरूषों को भी दर्शाया गया है। दूसरे दृश्य से मद्रास के सीनेट हाउस को चित्रित किया गया है। इसी हवेली में इनके अतिरिक्त मद्रास के गवर्नमेन्ट हाउस, हाईकोर्ट, प्रेसीडेनसी कॉलेज आदि को चित्रित किया गया है। इन चित्रों से यहां इस क्षेत्र पर कम्पनी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।[21]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति चित्रों की परम्परा प्राचीन थी एवं इनका विकास शनैः शनैः मुगल, ब्रिटिश एवं अन्य प्रभावों के कारण हुआ है। इस विकास के मार्ग में अनेक प्रोत्साहन एवं बाधाओं ने अपना मुकाम बनाया लेकिन बीसवीं शताब्दी में लोगों की रूचि परिवर्तित होने लगी और पर्यटक के विकास के साथ ही इन चित्रों की ओर फिर से रूझान पैदा हुआ। इस रूझान ने ही शेखावाटी के भित्ति चित्रों के विकास के चरणों को प्रकाश में लाने के लिए शोध कार्यों को प्रोत्साहन प्रदान किया। इन भित्ति चित्रों के फलस्वरूप शेखावाटी में नगरीकरण के चरणों के प्रति शोध की जिज्ञासा बढ़ी हैं। इन भित्ति चित्रों के अध्ययन एवं शोध के माध्यम से शेखावाटी अंचल के विभिन्न आयामों एवं पक्षों का अध्ययन की असीम संभावनाएं प्रतीत होती है।

***शोधार्थी**
इतिहास विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. पुरोहित, डॉ. अनिला एवं मीणा, ख्यालीराम का लेख : शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियों में भित्ती चित्र एवं उनका संरक्षण, राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसिडिंग्स, पृ. 177
2. महला, डॉ. चार्वी : शेखावाटी भित्तिचित्रों पर मुगल एवं ब्रिटिश प्रभाव, प्राक्कथन, पृ. iii, iv
3. देखे दुल्लर, डॉ पुष्पा का लेख : शेखावाटी के भित्तिचित्रों में समसामयिक परिवेश, राजस्थान, राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रासिडिंग्स, पृ. 106

---

4. वही, पृ. 175
5. महला, डॉ चार्वी : शेखावाटी भित्तिचित्रों पर मुगल एवं ब्रिटिश प्रभाव, पृ. 60
6. जांगिड़, लक्ष्मीकान्त : पर्यटन अवलोकन, पृ. 58
7. वही, पृ. 59
8. पुरोहित, डॉ. अनिला एवं मीणा, ख्यालीराम का लेख : शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियों में भित्ती चित्र एवं उनका संरक्षण, राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसिडिंग्स, पृ. 179
9. निर्विरोध, तारादत्त : शेखावाटी : सांस्कृतिक इतिहास के विविध आयाम, पृ. 13
10. पंचोली, डॉ. रामानुज : टेल्स ऑफ लव इन राजस्थान पेंटिंग्स, पृ. 122–115
11. शर्मा, झाबरमल : सीकर का इतिहास, पृ. 22
12. ब्राउन, पर्सी : इण्डियन पेंटिग अन्डर दी मुगल्स, पृ. 20
13. प्रताप, रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृ. 162
14. महला, डॉ. चार्वी : शेखावाटी भित्तिचित्रों पर मुगल एवं ब्रिटिश प्रभाव, पृ. 78
15. पाण्डे, डॉ. राम : राजस्थान के भित्तिचित्र – एक सफरनामा, शोधक, पृ. 12
16. प्रताप, रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृ. 305
17. नीरज, जयसिंह : राजस्थानी चित्रकला, पृ. 83
18. सिंह, कुंवर संग्राम : जयपुरस् युनिक कॉन्ट्रब्यूशन टू राजस्थान, पृ. 29–30
19. अग्रवाल, दिनेश चन्द्र : कम्पनी शैली – एक ऐतिहासिक सन्दर्भ, पृ. 29
20. कपूर, इले : राजस्थान दी गाइड टू पेन्टेड ऑफ शेखावाटी, पृ. 15
21. महला, डॉ. चार्वी : शेखावाटी भित्तिचित्रों पर मुगल एवं ब्रिटिश प्रभाव, पृ. 88